REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

"अनुसूचित जनजाति बालिकाओं हेतु संचालित योजनाओं का अध्ययन"

अमित चन्द्रा , डॉ. बीना सिंह
प. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :– समाज के संतुलित विकास के लिए बालकों के साथ–साथ बालिकाओं की शिक्षा को महत्व दिया जाना आज की महती आवश्यकता है। चूँकि अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिला साक्षरता अन्य जातियों की अपेक्षा बहुत कम है। छत्तीसगढ़ में देखे तो अनुसूचित जनजाति की साक्षरता औसत 59.09 प्रतिशत है, जिसमें 69.67 प्रतिशत पुरुष तथा 48.76 प्रतिशत महिलाएँ (2011 के अनुसार) ही शिक्षित हैं। शासन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं को प्रोत्साहन देने के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही है ताकि वे प्रेरित होकर अध्ययन हेतु शालाओं में पहुंचे, अध्ययन करे तथा लाभान्वित हों। इन योजनाओं का बालिकाओं की शिक्षा के संदर्भ में प्रभाविता का अध्ययन करने के लिए यह शोध कार्य किया गया है। शोध निष्कर्ष यह दर्शाते है कि सरस्वती सायकल योजना के लागू होने से शाला में 5–6 किमी दूरी से आने वाली छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के द्वारा 95 प्रतिशत परिवार बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए प्रेरित हुए है।

प्रस्तावना (Introduction) :– देश में शिक्षा की स्थिति को सुधारने के लिए और सार्वभौम बुनियादी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार द्वारा सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित की गयी। इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया था। वर्तमान युग में समाज के संतुलित विकास के लिए बालकों के साथ–साथ बालिकाओं की भी शिक्षा को महत्व देना होगा।

यद्यपि शासन ने शिक्षा के क्षेत्र में और विशेषकर अनुसूचित जनजाति वर्ग की शिक्षा के क्षेत्र में अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन कर इनके शैक्षिक स्तर को सुधारने हेतु प्रयास किया है। जिसके फलस्वरूप इनके शिक्षा के स्तर और साक्षरता दर में बढ़ोत्तरी हुई है। शासन द्वारा लागु योजनाओं से इन्हे निश्चित रूप से लाभ तो मिला है, इसके द्वारा समाज को शिक्षा के प्रति जागृत कर बच्चों को शैक्षणिक संस्थाओं में अध्ययन हेतु आकृष्ट किया जा रहा है। विभाग की प्रमुख योजनाएँ जो उपरोक्त उद्धेश्यो सें संचालित है निम्नलिखित है –

1. निःशुल्क गणवेश योजना
2. छात्र दुर्घटना विमा योजना
3. पुस्तकालय योजना
4. बालिका प्रोत्साहन योजना
5. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना
6. सरस्वती सायकल वितरण योजना

बालिकाओं के संदर्भ में निःशुल्क पाठ्यपुस्तक योजना एवं सरस्वती सायकिल योजना मुख्य है। इस शोध में इस प्रमुख योजनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। ताकि इन्हें और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सके।

शोध के उद्देश्य (Objective of the Study) –

शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है –

1. सरस्वती सायकिल योजना के क्रियान्वयन की जानकारी प्राप्त करना।
2. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन की जानकारी प्राप्त करना।
3. सरस्वती सायकिल योजना के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का पता लगाना।
4. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का पता लगाना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) –

इस शोध के निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गयी है –

1. सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं पाई जाएगी।
2. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं पाई जाएगी।
3. सरस्वती सायकल वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।
4. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।
5. सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत होगी।
6. सरस्वती सायकल वितरण योजना से माता–पिता बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित होंगे।
7. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से माता–पिता बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित होंगे।

परिसिमन (Delimitation of the study) – यह शोध जांजगीर जिले की उच्चतर माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत बालिकाओं के लिए सरस्वती सायकल वितरण तथा निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) – सर्वेक्षण विधि –

- **न्यादर्श (Sample)** – जांजगीर जिले के डभरा विकासखण्ड के आठ शालाएँ चयनित की गई। इन 8 शालाओं की 100 छात्राओं का यादृच्छिक चयन अध्ययन हेतु किया गया।
- **उपकरण (Tools) –**

प्रस्तुत शोध कार्य प्रदत्तों के संकलन के लिए निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. प्राचार्यो के लिए साक्षात्कार अनुसूची (सरस्वती सायकल वितरण योजना)
2. प्राचार्यो के लिए साक्षात्कार अनुसूची (निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना)
3. छात्राओं के लिए साक्षात्कार अनुसूची (सरस्वती सायकल वितरण योजना)
4. छात्राओं के लिए साक्षात्कार अनुसूची (निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना)

सांख्यिकी विश्लेषण (Statistical Operations) –

प्राप्त सांख्यिकी के आधार पर विश्लेषण निम्नानुसार किया गया –

परिकल्पना क्रमांक – 01

सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं पायी जायेंगी।

सारणी क्रमांक – 01 (अ)

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या पिछले वर्षो में वितरित सायकल की गुणवत्ता से आप संतुष्ट है।	100%	0%
2	क्या सायकल वितरण सत्र आरंभ में हो जाता है।	0%	100%
3	क्या इस योजना से शैक्षिक लाभ मिल रहा है।	100%	0%
4	क्या सरस्वती सायकल वितरण में संस्था को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।	87.5%	12.5%

व्याख्या :– उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्राचार्य सायकल गुणवत्ता से संतुष्ट है किंतु इसके वितरण में समस्याएँ है।

सारणी क्रमांक – 01(ब)

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या आपको सरस्वती सायकल प्रदाय योजना की जानकारी है।	73%	27%
2	क्या सरकार बालिकाओं का विकास कर रही है।	95%	5%
3	क्या सरकार की योजना का क्रियान्वयन हो रहा है।	95%	5%
4	क्या सरकार की योजना सायकल प्रदान करके आपको लाभान्वित करना है।	95%	5%
5	क्या सरकार की योजना आप तक समय पर पहुंच जाती है।	89%	11%
6	क्या आप योजना का भरपूर लाभ उठा पाती है।	88%	12%
7	क्या आप इस योजना से खुश है।	93%	7%

व्याख्या :– छात्राओं से प्राप्त उत्तरों के अनुसार सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं पाई जायेगी।

सारणी क्रमांक – 02 (अ)

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या पिछले वर्ष में वितरित पाठ्य वितरण से विद्यालय की शिक्षा गुणवत्ता में सुधार पाया गया।	100%	0%
2	क्या पाठ्यपुस्तक वितरण सत्र आरंभ में हो जाता है।	100%	0%
3	यदि विलंब से पुस्तक वितरण होता है तो शैक्षिक समस्याएँ आती है।	100%	0%
4	पुस्तक वितरण योजना में क्या संस्था को परेशानियां आती है।	37.5%	62.5%

व्याख्या :– प्रस्तुत सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि प्राचार्यो के अनुसार यदि विलंब से पुस्तक वितरण होता है तो शैक्षिक समस्याएँ आती है। प्रश्न क्रगांक 7 में 37.5 प्रतिशत प्राचार्यो का कहना है कि पुस्तक वितरण योजना में संस्था की परेशानी आती है।

सारणी क्रमांक – 02 (ब)

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या इस योजना से छात्राओं को शैक्षिक लाभ मिल रहा है।	100%	0%
2	क्या आपको निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना की जानकारी है।	77%	23%
3	क्या सरकार बालिकाओं का विकास चाहती है।	62%	38%
4	क्या सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन हो रहा है।	91%	9%
5	क्या सरकार निःशुल्क पुस्तक प्रदान करके आपको लाभान्वित कर रही है।	93%	7%
6	क्या सरकार की इस योजना का लाभ आपको समय पर मिल रहा है।	92%	8%
7	क्या आप इस योजना का भरपूर लाभ उठा पाती है।	85%	15%
8	क्या आप और आपका परिवार इस योजना से संतुष्ट है।	94%	6%
9	क्या आप और आपका परिवार इस योजना से संतुष्ट है।	95%	5%

व्याख्या :– छात्राओं से प्राप्त उत्तरों के अनुसार निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के क्रियान्वयन में समस्याएँ नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

सरस्वती सायकल वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं के उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।

सारणी क्रमांक – 03

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या आपके अनुसार सरस्वती सायकल योजना लागू होने के उपरांत शाला ममें 5 से 8 कि.मी. की दूरी से आने वाली छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है।	100%	0%
2	क्या यह योजना बालिकाओं में शिक्षा के प्रति रूचि तथा उत्साहवर्धन में सहायक है।	100%	0%
3	क्या यह योजना छात्राओं को आत्मनिर्भर, साहसी एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक है।	100%	0%

व्याख्या :– प्राचार्यो के अनुसार सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुयी है। अतः परिकल्पना – 03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से शालाओं में बालिकाओं के उपस्थिति दर में वृद्धि होगी।

सारणी क्रमांक – 04

क्र.	प्राचार्यो की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या इस योजना से छात्राओं को शैक्षिक लाभ मिल पा रहा है।	100%	0%
2	क्या यह योजना ने समाज में शिक्षा के उत्थान तथा समाज के विकास में सहायक है।	87.5%	12.5%
3	क्या इस योजना के लागू करने के उपरांत शाला त्यागी छात्राओं की संख्या में कमी आई है।	100%	0%

व्याख्या :– प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि 100% प्राचार्यो के अनुसार निःशुल्क पाठ्यपुस्तक योजना से छात्राओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुयी है। अतः परिकल्पना – 04 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत होगी।

सारणी क्रमांक – 05

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या आपके स्कूल जाने का माध्यम सायकल है।	86%	14%
2	क्या शाला सायकल से आने पर समय एवं श्रम की बचत होती है।	93%	7%
3	क्या सायकल आपको अपने निजी कार्यो को सम्पादित करने में सहायक है।	96%	4%
4	क्या सायकल मिलने से पहले आपको शाला आने व अपने निजी कार्यो को करने में असुविधा होती थी।	88%	12%

व्याख्या :– उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं के समय व श्रम की बचत होती है अतः परिकल्पना – 05 की पुष्टि हो रही है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

सरस्वती सायकल वितरण योजना से माता–पिता, बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित होंगे।

सारणी क्रमांक – 06

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ/नहीं	
1	क्या आपके परिवार में लड़कियों को शाला भेजने के लिए प्रेरित किया जाता है।	95%	5%
2	क्या आपके गांव में हाईस्कूल की शिक्षा उपलब्ध है।	68%	32%
3	क्या सरस्वती सायकल योजना आपको शाला भेजने में सहायक हुई	92%	8%
4	क्या आपके परिवार में लड़कियो को पढ़ाया जाता है।	96%	4%
5	क्या सरस्वती सायकल योजना में प्राप्त सायकल से आप प्रतिदिन विद्यालय जाती है।	86%	4%
6	क्या आपके माता–पिता आपको शिक्षा में आगे पढ़ाने के लिए प्रेरित हुए है।	96%	4%
7	क्या इस योजना से आपका परिवार प्रभावित होता है।	95%	5%

व्याख्या :– उपरोक्त सारणी में किये प्रश्नों के द्वारा परिकल्पना क्रमांक – 06 की पुष्टि हो रही है।

परिकल्पना क्रमांक – 07

निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से माता–पिता, बालिकाओं को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित होंगे।

सारणी क्रमांक – 07 (अ)

क्र.	छात्राओं की साक्षात्कार अनुसूची प्रश्न	प्रतिशत में उत्तर हॉ / नहीं	
1	क्या आपके परिवार में लड़कियों को शाला भेजने के लिए प्रेरित किया जाता है।	96%	4%
2	क्या निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से आपका परिवार आपको शाला भेजने के लिए प्रेरित हो रहा है।	95%	5%
3	क्या आपके माता–पिता आपको उच्च शिक्षा देना चाहते है।	95%	5%
4	क्या शिक्षा से आपका परिवार प्रभावित होता है।	94%	6%
5	क्या शिक्षा का उपयोग आप समाज के विकास के लिए करेंगी	95%	5%
6	क्या आपके शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य आत्मनिर्भर होना है।	92%	8%

व्याख्या :– उपरोक्त तालिक द्वारा दर्शाये गये प्रश्नों के अवलोकन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि परिकल्पना 7 की पुष्टि हो रही है।

निष्कर्श (Conclusions) –

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये गये :–

1. सरस्वती सायकल वितरण योजना के क्रियान्वयन में यह देखी गयी है कि यदि इस योजना का क्रियान्वयन सत्र आरंभ में नहीं हो तो, संस्था को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस समस्या के बावजूद सरस्वती सायकल योजना से बालिकाओं को शैक्षिक लाभ मिल रहा है। बालिकाएं इस योजना से खुश है।
2. सरस्वती सायकल वितरण योजना से बालिकाओं की उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है। इस योजना के लागू होने से शाला में 5 से 8 कि.मी. की दूरी से आने वाली छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है क्योंकि कई दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में हाईस्कूल की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसी परिस्थिति में यह योजना करागर साबित हो रही है।
3. सरस्वती सायकल योजना से बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत हुई है। अध्ययन हेतु चयनित शालाओं के अवलोकन करने से ज्ञात हुआ है कि 93 प्रतिशत बालिकाओं के समय एवं श्रम की बचत हो रही है।
4. सरस्वती सायकल योजना से माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए प्रेरित हो रहे है। यह 92 प्रतिशत बालिकाओं को शाला भेजने में सहायक हुई है। 96 प्रतिशत माता–पिता अपने बच्चों को आगे पढ़ाने के लिए प्रेरित हुए है।
5. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार आया है। इस योजना में भी कुछ परेशानी होती है। लेकिन इसका हल निकल जाता है।
6. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के द्वारा 95 प्रतिशत परिवार बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए प्रेरित हुए है।
7. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से बालिकाओं में शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ी है एवं उत्साहवर्धन हुआ।
8. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना के द्वारा 95 प्रतिशत परिवार बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए प्रेरित हुए है।

सुझाव (Suggestions) :–

1. सरस्वती सायकल वितरण सत्रारंभ में हो जाना चाहिए ताकि बालिकाओं को इसका भरपुर लाभ मिल सकें।
2. सरस्वती सायकल योजना का लाभ अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एव बी.पी. एल.कार्डधारी बालिकाओं के अतिरिक्त उच्च शैक्षणिक योग्यता वाली छात्राओं को भी मिलना चाहिए।
3. सरस्वती सायकल वितरण योजना की प्रक्रिया को सरल किया जाना चाहिए।
4. निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण योजना से संस्था मे जो परेशानियॉ होती है उन्हें प्राचार्यो एवं शिक्षकों से मिलकर दूर करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ (References) :–

1. जैन, शिल्पा, (2016). प्राचिन काल से वर्तमान काल तक नारी चेतना का सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में योगदान. *नई शिक्षा पद्धति,* अंक 06, 86–89
2. झाझड़िया, रीता. (2017). उच्च शिक्षा में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की नामांकन स्थिति– प्रवृत्ति विश्लेशण. *शोध समिक्षा एवं मुल्यांकन,* (फरवरी), 32–33.
3. खान, तबस्सूम (2013) " गोंड़ जनजाति की परंपरागत जानकारी का शैक्षिक व सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन, (एम.एड. शोधप्रबंध, कोणार्क शिक्षा महाविद्यालय जॉजगीर)
4. खरे, साधना (1998) " कोरबा क्षेत्र की जनजातियों में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन – एक अध्ययन (पी–एच. डी. समाजशास्त्र गुरू घासीदास विश्वविद्यालय)
5. कुमारी, सुमन (2011) ने पेटरवार विकासखण्ड की विशिष्ट आदिवासी संथाल जनजाति के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन. (एम.एड. शोधप्रबंध, कोणार्क शिक्षा महाविद्यालय जॉजगीर)
6. मिश्रा, रंजना (1999) ने बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा : प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के संदर्भ में एक अध्ययन. (पी–एच0डी0, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी.)
7. राय, कृष्णकांत. (2016). अनुसूचित जनजाति में बालिका शिक्षा के लिये किए गए शासन के प्रयास. *नई शिक्षा पद्धति.* अंक 12. 138–141.
8. राय, कृष्णकांत. (2016). बैगा जनजाति में बालिका शिक्षा– एक अध्ययन. *नई शिक्षा पद्धति,* अंक 12. 129–131.
9. शुक्ला, कीर्ति. (2016). प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन– रीवां जिले के विशेष संदर्भ में . *नई शिक्षा पद्धति.* 9. 141–143.

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि पर प्रभाव का अध्ययन

अमित चन्द्रा
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग
प0 सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़,
बिलासपुर, भारत

बीना सिंह
शोध निर्देशक,
शिक्षा शास्त्र विभाग
प0 सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़,
बिलासपुर, भारत

सारांश

देष की आजादी के इतने वर्षो पश्चात् भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों का शैक्षिक विकास नहीं हो पाया है। अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों में यह और भी कम देखा गया है, तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिला साक्षरता अन्य जातियों की अपेक्षा बहुत कम है। छत्तीसगढ़ में देखे तो अनुसूचित जनजाति की केवल 48.76 प्रतिशत महिलाएँ (2011 के अनुसार) ही शिक्षित हैं। समाज के समुचित विकास के लिए बालकों के साथ–साथ बालिकाओं की शिक्षा को महत्व दिया जाना आज की महती आवश्यकता है। अनुसूचित जनजाति समूहों का सामाजार्थिक स्तर कम है। अतः अनुसूचित जनजातियों के व्यक्तियों के सामाजार्थिक स्तर के विकास पर ध्यान दिया जाना होगा। शोध निष्कर्ष यह दर्शाते है कि अनुसूचित जनजाति के छात्राओं ने उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर पर विद्यार्थी नहीं मिले इसका कारण ग्रामीण परिवेष में अभिभावकों में शिक्षा के प्रति रूचि का अभाव, गांव में उचित शैक्षिक वातावरण का न होना, रूढ़िवादी, सामाजिक बुराईयॉ, अशिक्षा, गरीबी, कन्या शिक्षा के प्रति पालकों का नकारात्मक दृश्टिकोण एवं इस क्षेत्र की समसामयिक एवं आंतरिक वातावरण भी हो सकते है। शैक्षिक वातावरण का जनजातियों में न होने का कारण अशिक्षा, गरीबी और रूढि वादिता के तहत् पालकों में नकारात्मक दृष्टिकोण है। सामाजार्थिक स्तर का कोई भी प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि पर नहीं पड़ता है।

मुख्य शब्द : अनुसूचित जनजाति वर्ग की शिक्षा ।

प्रस्तावना

विश्व के जनजातीय मानचित्र में भारत का स्थान, अफ्रीका के बाद अंकित है। जनगणना 2011 के अनुसार छ.ग. में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 78,22,902 है शिक्षा के क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाओं का प्रतिशत संतोशजनक नहीं है। चूँकि अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिला साक्षरता अन्य जातियों की अपेक्षा बहुत कम है। छत्तीसगढ़ में देखे तो अनुसूचित जनजाति की साक्षरता औसत 59.09 प्रतिशत है, जिसमें 69.67 प्रतिशत पुरुश तथा 48.76 प्रतिशत महिलाएँ (2011 के अनुसार) ही शिक्षित हैं। लड़कियों में स्कूल छोड़ने का प्रमाण भी अधिक है। जाति, वर्ग एवं लिंग भेदभाव के चलते अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाएँ शैक्षणिक सुविधाओं का पूर्ण उपभोग नहीं कर पाती हैं। भारत के ग्रामीण तथा शहरी इलाकों में अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाओं का बहुत बडा हिस्सा गरीबी रेखा से निचे जीवन यापन करता हैं तो उनके समक्ष उच्च शिक्षा प्राप्त करना जटिल समस्या की तरह है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आज भी छत्तीसगढ़ राज्य के अनुसूचित जनजाति महिलाओं की साक्षरता दर केवल 48.76 प्रतिशत ही है। सरकार द्वारा इनके साक्षरता दर को बढाने हेतु अनेक प्रयत्न करने के बाद भी आदिवासी क्षेत्रों में साक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत में आशातीत विकास एवं वृद्धि नहीं हो पा रही है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी संतोशजनक नहीं है। इस शोध में अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ज्ञात करना।
2. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
3. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि का पता लगाना।

ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

4. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव को ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ है –

1. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।
2. अनुसूचित जनजातियों के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
3. अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
4. अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitation of the study)

यह शोध जांजगीर जिले के डभरा विकासखंड के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक षालाओं तक सीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process)

न्यादर्श (Sample)

इस शोध हेतु अनियत प्रतिदर्ष विधि से कक्षा 9वी एवं 10वीं में अध्ययनरत 98 छात्राओं को न्यादर्श हेतु चुना गया है, ये जांजगीर जिले के डभरा विकासखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत है।

उपकरण (Tools)

1. सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी – आर.एल.भारद्वाज (SESS)
2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण– स्वनिर्मित परीक्षण
3. शैक्षिक रूचि परीक्षण – एस.पी.कुलश्रेष्ठ

सांख्यिकी विश्लेषण **(Statistical Operation)**

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 01

समूह	N	M	Sd	Df	परिणाम
अनुसूचित जनजाति	98	45.74	5.314	114	उच्च सामाजिक स्तर का एक भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती है।

व्याख्या

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर का 1 भी विद्यार्थी प्राप्त नही हुआ। अधिकांष छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर मध्यम एवं कुछ छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तंर निम्न पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 1 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 02

समूह	N	M		Sd		r	परिणाम
अनुसूचित जनजाति	98	56.206	51.034	13.5	13.5	0.1002	+ ve सहसंबंध

व्याख्या

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक 0.1002 प्राप्त हुआ है। यह मान निम्न धनात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है अतः परिकल्पना क्रमांक 02 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 03

समूह	N	M		Sd		r	परिणाम
अनुसूचित जनजाति	98	46-587	39-38	12-9	6-77	-0.106	- ve सहसंबंध

व्याख्या

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से समसम्बन्ध गुणांक का मान –0.106 प्राप्त हुआ। यह मान अत्यंत न्यून स्तर पर ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्षित करता है। अतः परिकल्पना 03 की पुष्टि नहीं होती।

परिकल्पना क्रमांक – 04

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जावेगा।

व्याख्या

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक रूचि परीक्षण के

ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E- ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रदत्तो की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान –0.279 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षण में न्यून स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्शित करता है। अत परिकल्पना क्रमांक – 04 की पुष्टि नहीं होती है।

निष्कर्ष (Conclusions)

1. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं ने उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर पर विद्यार्थी नहीं मिले इसका कारण ग्रामीण परिवेष मे अभिभावको मे शिक्षा के प्रति रूचि का अभाव, गाव में उचित शैक्षिक वातावरण का न होना, रूढिवादी, सामाजिक बुराईयाँ, अशिक्षा, गरीबी, कन्या शिक्षा के प्रति पालकों का नकारात्मक दृष्टिकोण एवं इस क्षेत्र की समसामयिक एवं आतरिक वातावरण भी हो सकते है।
2. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध नहीं पाया गया।
3. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है।
4. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह सम्बन्ध नही पाया गया।

सुझाव (Suggestions)

1. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों को ग्रामीण परिवेश के स्तर के अनुरूप बनाया जाये जिससे अनुसूचित जनजाति के छात्राओं मे अध्ययन के प्रति रूचि जागृत हो।
2. शिक्षिकाओं की संख्या शिक्षकों के बराबर हो जिससे ग्रामीण बालिकाओं को पढने एवं सीखने के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके।
3. पुस्तकें, कापियाँ व अन्य लेखन सामग्री निर्धन परिवार के छात्राओं को निःशुल्क उपलब्ध करायी जावें।
4. ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति एवं जनसंख्या के आधार पर बालिकाओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था हो ताकि दूर दराज क्षेत्रों की बालिकाओं को इसका लाभ मिल सकें।
5. शासन द्वारा बनाई गई सामाजिक–आर्थिक व शैक्षिक विकास योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार किया जावे तथा कागजी पत्रक आदान प्रदान के बजाए वास्तविक रूप से क्रियान्वत किया जावे।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. *मुवात महेन्द्र कुमार (2002–03) – "आदिवासी क्षेत्रों मे प्राथमिक*
2. *स्तर के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्राओं के सामाजिक स्तर का उनकी स्वयंतना तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"।*
3. *राय, श्रीमती सीमा (1999–2000) – "बस्तर जिले की अनुसूचित जनजाति के विभिन्न वर्गो के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन"।*
4. *राय, कृष्णकांत (2016). अनुसूचित जनजाति में बालिका शिक्षा के लिये किए गए शासन के प्रयास. नई शिक्षा पद्धति. अंक 12. 139–141.*
5. *राय, कृष्णकांत (2016). बैगा जनजाति मे बालिका शिक्षा– एक अध्ययन. नई शिक्षा पद्धति. अंक 12. 129–131.*
6. *शुक्ला, कीर्ति. (2016). प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन– रीवा जिले के विशेष संदर्भ में . नई शिक्षा पद्धति. 9. 141–143.*